शिक्षक - रवि शंकर राय , विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 21-08-2020 , वर्ग - M.A-II

फ्रीडमैन का मुद्रा का माँग सिद्धान्त
(Friedman's theory of Demand for Money)

फ्रीडमैन ने मुद्रा का एक माँग फलन प्रस्तुत किया है जो उनकी मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त तथा कीमतों की पुनर्व्याख्या में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

फ्रीडमैन का मानना है कि मुद्रा का माँग फलन समष्टिपरक अर्थशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण स्थिर फलन है। वे मुद्रा को परिसम्पत्तियों के एक ऐसे प्रकार के रूप में मानते हैं जिसमें सम्पत्ति संचय करने वाले अपनी सम्पत्ति का एक भाग को रख सकते हैं।

अतः फ्रीडमैन के अनुसार —

व्यक्ति मुद्रा का संचय उसके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के लिए करते हैं। यह ध्यान रहे कि मुद्रा द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवा यह होती है कि यह सामान्य क्रय शक्ति के रूप में कार्य करती है। अतः इसका वस्तुओं तथा सेवाओं के क्रय में सुविधापूर्वक उपयोग किया जा सकता है।

मुद्रा की मांग से सम्बन्धित उनका दृष्टिकोण न तो मुद्रा संचय के लिए किसी उद्देश्य पर विचार करता है और न ही यह लेन-देन तथा क्रय-विक्रय के उद्देश्य से मुद्रा की माँग के बीच कोई अन्तर करता है। फ्रीडमैन मुद्रा की माँग को केवल पूँजीगत परिसम्पत्तियों की माँग के सामान्य सिद्धान्त के प्रयोग के रूप में मानते हैं। वे उन विभिन्न तत्वों का विश्लेषण करते हैं जो मुद्रा की माँग को निर्धारित करते हैं और इस विश्लेषण से मुद्रा का माँग फलन व्युत्पन्न करते हैं।

फ्रीडमैन का मुद्रा का नगद माँग फलन (M^d) को निम्न प्रकार लिखा जा सकता है।

$$M^d = f(W, h, r_m, r_h, r_e, P, \frac{\Delta P}{P}, U)$$

चूँकि वास्तविक मुद्रा शेषों की माँग, मुद्रा की नकद माँग को कीमत स्तर द्वारा ~~विभाजित~~ विभाजित करने पर प्राप्त किया जाता है। अतः वास्तविक मुद्रा शेष की माँग को निम्न प्रकार लिखा जा सकता है)

$$\frac{M^d}{P} = f(W, h, r_m, r_h, r_e, \frac{\Delta P}{P}, U)$$

जहाँ -

M^d = मुद्रा की नगद माँग

$\frac{M^d}{P}$ = वास्तविक मुद्रा शेष की माँग

W = व्यक्तियों की सम्पत्ति,

h = व्यक्तियों द्वारा संचित मानवीय सम्पत्ति तथा कुल सम्पत्ति का अनुपात

r_m = मुद्रा पर प्रतिफल की दर या ब्याज दर
r_b = ऋण पत्रों पर ब्याज दर
r_e = शेयरों पर प्रतिफल की दर,
P = कीमत स्तर
$\Delta P/P$ = कीमत स्तर में परिवर्तन अर्थात मुद्रा स्फीति की दर)
U = संस्थागत तत्वों को प्रदर्शित करते हैं।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि मुद्रा की माँग को निर्धारित करने वाला प्रमुख तत्व व्यक्तियों की सम्पत्ति होती है। ~~सम्पत्ति~~ सम्पत्ति के अन्तर्गत फ्रीडमैन ऋण-पत्र, शेयर या मुद्रा जैसी और मानवीय सम्पत्तियाँ (non-human wealth) ही सम्मिलित नहीं करते जिनसे प्रतिफल की विभिन्न दरें प्राप्त होती हैं बल्कि मानवीय सम्पत्ति या मानवीय पूँजी को सम्मिलित करते हैं।

मानवीय सम्पत्ति से फ्रीडमैन का अर्थ एक व्यक्ति की अपनी वर्तमान तथा

भावी आय से होता है। जबकि गैर-मानवीय सम्पत्ति को सरलतापूर्वक मुद्रा में हस्तान्तरित किया जा सकता है। अर्थात उसे तरल बनाया जा सकता है। मानवीय सम्पत्ति का इस प्रकार का प्रतिस्थापन सरलतापूर्वक संभव नही होता है। इस प्रकार मानवीय सम्पत्ति के गैर-तरल स्वभाव को प्रदर्शित करता है और इस लिए मानवीय सम्पत्ति तथा गैर मानवीय सम्पत्ति के अनुपात को मुद्रा के माँग फलन में एक स्वतन्त्र चर के रूप में सम्मिलित किया गया है।

एक व्यक्ति की मुद्रा की माँग प्रत्यक्ष रूप से उसकी कुल सम्पत्ति पर निर्भर करती है। वस्तुतः एक व्यक्ति की कुल सम्पत्ति उसके द्वारा मुद्रा संचय की उपरी सीमा प्रदर्शित करता है। तथा माँग सिद्धान्त में उपभोक्ता के बजट सीमा के समान होती है।